4. कर्ण का जीवनदर्शन

स्वाध्याय

1. ऊंचे स्वर में पढ़िए और वाक्य में प्रयोग कीजिए :

1) अत्यल्प - बहुत थोड़ा

- वाक्य : सांसारिक भोग-विलास अत्यल्प सुख देते हैं।

2) चाकचिक्य - चमक, चका-चौंध

- वाक्य : देहाती मित्र मुंबई की चाकचिक्य पर मुग्ध हो गया।

3) कनकाभ - सुनहले

- वाक्य : राजमहल के कनकाभ शिखर हमारा ध्यान आकृष्ट कर रहे थे।

4) तपःक्षीण - प्रभावहीन

- वाक्य : शाप के प्रभाव से मुनि तुरंत तपःक्षीण हो गए।

5) क्लेश- कष्ट, वेदना

- वाक्य : पुत्र के अनुचित व्यवहार से पिता को बड़ा क्लेश हुआ।

6) झंझावात - तूफान

- वाक्य : बर्फीले झंझावातों में भी हमारे सैनिक देश की रक्षा करने में डटे हुए हैं।

7) फणिबंध - नागपाश

- वाक्य : पता नहीं, संकट के इस फणिबंध से हमें कौन छुड़ाएगा?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

2. संक्षेप में उत्तर दीजिए :

1) वैभव से क्या प्राप्त होता है ?

- वैभव से मनुष्य को ढेर सारी चिन्ताएँ और थोड़ी-सी हँसी-खुशी प्राप्त होती है। इसके अतिरिक्त उसे चमक-दमक दिखाने का अवसर और क्षणिक भोग-विलास प्राप्त होता है।

2) धन-संपत्ति किस लिए है ?

- धन-संपत्ति परोपकार के लिए है।

3) सुख-समृद्धि के अधीन मानव का क्या होता है ?

- सुख-समृद्धि के अधीन मानव का तेज-प्रभाव दिन-प्रतिदिन क्षीण होता जाता है और उसकी दुर्दशा होती है।

4) फणिबंध से कौन छुड़ाते हैं ?

- फणिबंध से गरुड़ जैसे साहसी और वीर पुरुष ही छड़ाते हैं।

3. निम्नलिखित काव्य-पंक्तियों का भावार्थ स्पष्ट कीजिए :

1) वैभव-विलास की चाह नहीं, अपनी कोई परवाह नहीं,
बस यही चाहता हूँ केवल, दान की देव सरिता निर्मल,
करतल से झरती रहे सदा,
निर्धन को भरती रहे सदा।

- कर्ण श्रीकृष्ण से कहता है कि हे केशव ! आप मुझे राज्य देने का प्रलोभन दे रहे हैं, परंतु मैं वैभव-विलास का जीवन पसंद नहीं करता। मुझे अपनी कोई चिंता नहीं है। मुझे दान देने में रुचि है। इसलिए मैं केवल यही चाहता हूँ कि मैं गरीबों को हमेंशा दान देता रहूँ और उनके दुःख दूर करता रहूँ।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

2) **मैं गरुड़, कृष्ण ! मैं पक्षिराज, सिर पर न चाहिए मुझे ताज,**
दुर्योधन पर है विपद घोर, सकता न किसी विध उसे छोड़,
रणखेत पाटना है मुझको,
अहिपाश काटना है मुझको।

- कर्ण श्रीकृष्ण से कहता है कि इस समय मेरी स्थिति गरुड़ पक्षी के समान है। मुझे राजमुकुट नहीं पहनना है। इस समय दुर्योधन भारी संकट में है। युद्धरूपी नागपाश ने उसे जकड़ रखा है। मुझे दुर्योधन के इस नागपाश को काटना है- दुर्योधन को युद्ध में विजय दिलाना है। मुझे गरुड़ की तरह अपना दायित्व निभाना है।

4. टिप्पणी लिखिए :

1) कर्ण की अभिलाषा

- कर्ण दानी पुरुष है। वह प्रतिदिन जरूरतमंद लोगों को दान देता है। उसे राज्य पाने की इच्छा नहीं है। वैभव पाकर भोग-विलास में जीना उसके स्वभाव के विरुद्ध है। वह दयालु और उदार वृत्ति का है। गरीबों के प्रति उसके मन में करुणा है। उसकी यही अभिलाषा है कि वह अपनी दानवृत्ति से निर्धनों का दुःख दूर करता रहे।

2) कर्ण का मित्रधर्म

- कर्ण का जीवन अन्याय और अपमान से भरा हुआ था। एक दुर्योधन ने ही उसे सम्मान दिया और उसे अपना मित्र बनाया। कर्ण दर्योधन के इस उपकार को कभी नहीं भूल पाया। महाभारत का युद्ध शुरू होने से पहले श्रीकृष्ण उसे पांडवपक्ष में लेने गए। उन्होंने उसे राज्य देने का प्रलोभन भी दिया। परंतु कर्ण ने उनका प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया। उसने दुर्योधन का साथ छोड़ने से स्पष्ट इनकार कर दिया। इस प्रकार कर्ण ने दुर्योधन के प्रति अपने मित्र-धर्म का पालन किया।

5. विरोधी शब्द दीजिए :

1) **निर्मल x मलीन**
2) **निर्धन x धनवान**
3) **प्रभूत x कम**
4) **कोमल x कठोर**
5) **अमृत x विष**

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

6. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द कोष्ठक में से ढूँढ़कर उन शब्दों का वाक्य में प्रयोग कीजिए :

[सुखोपभोग, हथेली, प्रचुर, दरज, आँधी, पानी, गरल, चट्टान]

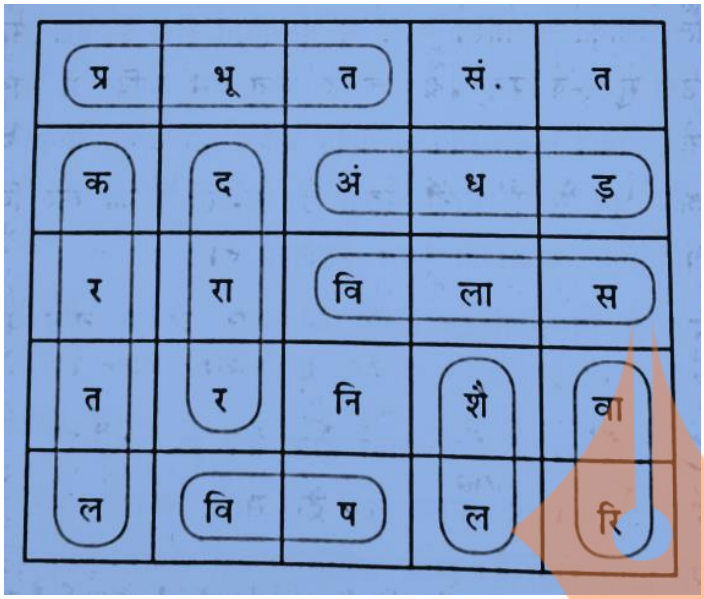

- सुखोपभोग = विलास, हथेली = करतल, प्रचुर = प्रभूत, दरज = दरार, आँधी = अंधड़, पानी = वारि, गरल = विष, चट्टान = शैल

- **वाक्य-प्रयोग :**

1) राजा सदा विलास में डूबा रहता था।
2) बच्चे का करतल देखकर ज्योतिषी ने उसका भविष्य बत दिया।
3) वह गाँव में रहता था, पर उसके पास प्रभूत संपत्ति थी।
4) गरुड़ पहाड़ों की दरार में निवास करता है।
5) सारी रात अंधड़ ने कहर मचा दिया।
6) सदा स्वच्छ वारि पीना चाहिए।
7) देखते ही देखते साँप का विष बच्चे के शरीर में फैल गया।
8) शैल से उस पार झरना था।

7. अंदाज अपना-अपना। : अपना मत स्पष्ट कीजिए।

1) यदि कोई जरूरतमंद इन्सान आपसे मदद माँगे तो आप क्या करेंगे ?

- यदि कोई जरूरतमंद इन्सान मुझसे मदद माँगे तो पहले मैं उसकी जरूरत के बारे में पूछूगा। यदि मुझे उसकी जरूरत सच्ची लगी तो मैं अवश्य उसकी मदद करूँगा। मदद करने में यदि दूसरों के सहयोग की आवश्यकता हुई तो उनका सहयोग भी लेने में मैं संकोच नहीं करूँगा।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

2) आपको पता चले कि आपका दोस्त संकट में फँसा हुआ है, तो आप क्या करेंगे ?

- संकट में पड़े हुए मित्र की मदद करना मेरा कर्तव्य है। इस कर्तव्य का पालन करके ही मैं मित्र-धर्म को निभा सकता हूँ, अपने आपको सच्चा दोस्त साबित कर सकता हूँ। इसलिए संकट में पड़े हुए मित्र को संकट से छुड़ाने में मैं कोई कसर न रखूगा।

3) आपके पास जरूरत से ज्यादा धन-संपत्ति है, तो आप क्या करेंगे ?

- अपने पास जरूरत से ज्यादा धन-संपत्ति होने पर मैं उसका उपयोग परोपकार में करूँगा। मैं अनाथआश्रम में वहाँ के जरूरतमंदों को उनकी जरूरी चीजें खरीदकर ला दूंगा। प्यासों के लिए प्याऊ बनवाऊँगा और गरीबों को अन्नदान दूंगा। इस प्रकार अपने पास जरूरत से ज्यादा धन-संपत्ति होने पर मैं उसका उपयोग दूसरों के दु:ख दूर करने में करूँगा।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in